10 रचनात्मक शिक्षण एवं तृप्ति

एन. नागराजू

सन्दर्भ और चुनौती

मेरे जीवन के अब तक के सबसे ज्यादा तृप्तिदायक दिन वे हैं जब मैं आन्ध्र प्रदेश में अनन्तपुर जिले के दूरदराज के एक गाँव में प्राथमिक स्कूल के बच्चों को पढ़ाया करता था। सरकारी प्राथमिक स्कूल के शिक्षक के रूप में छह वर्ष पूरे करने के बाद आज मैं यह बात कह सकता हूँ। अपनी नौकरी के पहले दिन से ही मुझे यह एहसास हुआ कि अपनी पढ़ाई के दौरान जो भी उत्कृष्ट तरीके मैंने सीखे थे उन्हें कक्षा में लागू करना मुश्किल था। न तो यह सही समय था और न ही सही सन्दर्भ। लेकिन मुझे यकीन है कि जो ज्ञान मैंने अपनी पढ़ाई के दौरान प्राप्त किया वह सभी प्रकार की स्थितियों से निपटने के लिए काफी अच्छा है। अपनी सेवा के प्रारम्भिक वर्षों में, जब मुझमें व्यवस्था और समुदाय की माँगों का सामना करने साहस नहीं था; मैंने स्थितियों से समझौता किया एवं बड़ी व्यवस्था का हिस्सा बन गया। खैर, अधिगम के परिणामों को लेकर समुदाय की स्कूल से जो माँगें होती हैं, उन्हें जल्दी पूरा करने के लिए गति पकड़ने में मुझे कुछ वर्ष लग गए। एक "प्रारूपिक" गाँव के स्कूल के सम्बन्ध में मेरे कुछ अवलोकन इस प्रकार हैं:

1. कई माता–पिता कुछ ही समय के भीतर (एक सप्ताह भर में) अपने बच्चों के अधिगम के परिणामों को देखना चाहते हैं।
2. कई बच्चे पाठ्य–पुस्तक में दी हुई कविताओं का पाठ बस पाठ करने के लिए कर देते हैं (किसी वर्ण, अवधारणा, सन्दर्भ और अर्थ के परिचय पर कोई ध्यान न देते हुए)।
3. वे पाठ्य–पुस्तक में सूचीबद्ध सभी शब्दावलियों को उचित ज्ञान या पहचान के बिना मौखिक रूप से बता सकते हैं।
4. पाठ्य–पुस्तक में दिए गए अभ्यासों को घर के बड़े या पड़ोसी पूरा कर देते हैं।
5. समुदाय में यह भावना प्रचलित है कि खेल खेलना (गतिविधियाँ) शिक्षा के लिए अच्छा नहीं है और शिक्षक स्कूल में केवल बच्चों के साथ खेलने के लिए आते हैं।
6. उनकी यह समझ कि स्कूल में शोर का होना अनुशासनहीनता की निशानी है।

विभिन्न हितधारक स्कूल को एक विशेष दृष्टिकोण से देखने के आदी हो चुके हैं। छह महीने के ईमानदार प्रयासों के बाद गाँव वालों ने यह बात मानी कि स्कूल में जो कुछ हो रहा है वह बच्चों की बेहतरी के लिए ही है। मैं नियमित रूप से माता–पिता के साथ बातचीत करने में बहुत सारा समय बिताता और उन्हें शिक्षा के प्रयोजन, महत्व आदि के बारे में बताता। माता–पिता को बात आसानी से समझाने के लिए मैंने उन्हें कृषि का उदाहरण दिया जिसमें बुवाई से कटाई तक छह महीने तक कड़ी मेहनत करनी पड़ती है, तभी अच्छी फसल प्राप्त होती है और हर चरण में बहुत ध्यान देने एवं देखभाल करने की जरूरत होती है। बच्चे को शिक्षित करना भी ऐसा ही है, इसके लिए बहुत सारा समय चाहिए; साथ ही ध्यान एवं देखभाल की आवश्यकता होती है। शिक्षा देना बिजली के एकदम विपरीत है कि आपने स्विच दबाया और तुरन्त बल्ब चमकने लगा। शिक्षक के रूप में मुझे अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। पर इस सन्दर्भ में मैंने उन्हें वरदान माना और एक रचनात्मक शिक्षण–अधिगम के तरीके को लागू किया जिसमें समाचार पत्रों का उपयोग शिक्षण के लिए एक संसाधन के रूप में किया गया (ईनाडू नामक तेलुगू दैनिक समाचार पत्र के बच्चों के लिए निकलने वाले रविवारीय परिशिष्ट "हाइ बुज्जी" को धन्यवाद)।

वर्णमाला का परिचय एवं पहचान

चरण ब: एक कविता के माध्यम से वर्णमाला का परिचय कराना लेकिन यह जरूरी नहीं कि कविता पाठ्य–पुस्तक की ही हो।

चरण 2: चार या पाँच ऐसे प्रश्न पूछना जिसके उत्तर ऐसे शब्द हों जो उसी वर्ण से शुरू होते हों जिस वर्ण को सिखाना है।

चरण 3: चुने हुए वर्ण को अलग करते हुए उत्तरों को श्यामपट्ट पर लिखना।

उदाहरण तेलुगू का प्रथम स्वर : అ (अ)

మీ ఇంట్లో వంట ఎవరు చేస్తారు? (అమ్మ, అక్క, అవ్వ)

मी इण्ट्लो वण्टा एवरु चेस्तारु? (अम्मा, अक्का, अव्वा)

నీవు ఇంటికి వెళ్ళగానే పుస్తకాలను ఎక్కడ పెడతావు? (అరుగు)

नीवु इण्टिकि वेळ्ळगाने पुस्तकालनु एक्क्डा पेडतावु? (अरुगु)

మీనాన్న ఉదయాన్నే పొలానికి దేనిని తీసుకొని వెళతాడు (అరక)

मी नान्ना उदयान्ने पोलानिकि देनिनि तीसुकोनि वेळताडु? (अरका)

పులి, సింహం ఎక్కడ ఉంటాయి (అడవి)

पुलि सिंहम एक्कडा उण्टायि? (अडवि)

हर प्रश्न का अपेक्षित उत्तर कोष्ठक में दिया गया है और जब बच्चे यह अपेक्षित उत्तर नहीं देते तो मुझे तब तक कोशिश करनी पड़ती जब तक कि वांछित उत्तर न मिल जाए। इस प्रक्रिया के कुछ फायदे भी हैं। इसमें बच्चे बोलते हैं (स्कूल में आए नए छात्र के लिए यह अच्छी गतिविधि है क्योंकि इससे सबसे मिलने–जुलने में मदद मिलती है)। बच्चे का डर दूर होता है (जिससे वार्तालाप और सम्प्रेषण में मदद मिलती है), और सबसे मुख्य बात यह कि इससे विद्यार्थी व शिक्षक को करीब आने और एक–दूसरे को समझने में मदद मिलती है।

चरण 4: सिखाए गए वर्ण का सुदृढ़ीकरण

पाठ्य–पुस्तक की कविता या पहले चरण में प्रयोग में लाई गई कविता को एक चार्ट पर लिख दिया जाता है और शब्दों में आए जिस वर्ण को सीखना है उसे चमकीले रंग में लिखा जाता है।

इसके बाद इन शब्दों को उनसे सम्बन्धित चित्रों के सन्दर्भ में दोहराया जाता है।

चरण 5: बच्चों के लिए अभ्यास

गृहकार्य के लिए हर बच्चे को समाचार पत्र का एक टुकड़ा दिया दिया जाता है जिसमें 10 से 15 शब्दों की तीन–चार लाइनें हों। बच्चे को समाचार पत्र के उस टुकड़े में सिखाए गए वर्ण पर पेंसिल से गोला बनाना होता है (सावधान! कभी–कभी यह गतिविधि इस कदर संक्रामक हो जाती है कि बच्चे अपने सामने आने वाली हर छपी हुई सामग्री में वर्णों पर गोला बनाने लग जाते हैं–यहाँ तक कि अपने भाई–बहनों की पाठ्य–पुस्तकों को भी नहीं छोड़ते !)

चरण 6: मूल्यांकन

विद्यार्थियों से यह कहना कि वे विभिन्न चीजों के नामों के बारे में सोचें और यह कोशिश करें कि वर्णमाला के उसी वर्ण विशेष के साथ शुरू होने वाले शब्द बताएँ।

పిల్లలు ఇంటి దగ్గర ఇది చేస్తారని అమ్మ కొడుతుంది (అల్లరి)

पिल्ललु इण्टि दगरा इदि चेस्तारनि अम्मा कोडुतुन्दि? (अल्लरि)

మీరు మీ తలను దీనిలో చూస్తూ దువ్వు కొంటారు (అద్దం)

मीरु मी तलनु दीनिलो चूस्तू दुव्वू कोण्टारु (अद्दम)

इस विधि से परिणाम पाने के लिए बहुत धैर्य एवं समय की आवश्यकता होती है। शुरुआती कुछ वर्णों के लिए शिक्षण–अधिगम की प्रक्रिया बहुत अधिक समय लेती है। पर एक बार जब बच्चे इस विधि से परिचित हो जाते हैं तब यह गति पकड़ लेती है और बचे हुए वर्णों व मात्राओं (गुणिमतालु) के लिए कम समय लगता है।

कुछ छोटे–मोटे परिवर्तन के साथ, इस विधि का प्रयोग मात्राएँ सिखाने के लिए भी किया जा सकता है। एक कविता के माध्यम से इस बात का परिचय दिया जाता है कि स्वर व्यंजनों से जुड़कर मात्राएँ (गुणिमताल़ु) कैसे बनती हैं।

चरण 1: निम्नलिखित कविता का लयबद्ध तालियों के साथ अभ्यास कराना चाहिए–

అ ఆ ఇ ఈ ఉ ఊ
अ आ इ ई उ ऊ

క కా కి కీ కు కూ,
क का कि की कु कू

ఎ ఏ ఐ
□ए ऐ

కె కే కై...
कॅ के कै

ఒ ఓ ఔ
ऑ ओ औ

కొ కో కౌ
कॉ को कौ

అం అః
अं अ:

కం కః
कं क:

चरण 2: एक सहायक शिक्षण सामग्री की मदद से, जिसे इसी काम के लिए बनाया गया है, सभी स्वरों की मात्राएँ (गुणिमताल़ु) दिखाई जा सकती हैं एवं उसकी सहायता से बच्चों को सिखाने व दृढ़ीकरण करने का काम किया जा सकता है।

गत्ते से दो चक्र बनाए जाते हैं–जिनमें एक–दूसरे से थोड़ा–सा बड़ा हो। बड़े चक्र की मार्जिन में मात्राओं के प्रतीक चिह्नों को लिख दिया जाता है और भीतरी चक्र में व्यंजनों को। मात्राओं के एकदम नीचे दो खिड़कियाँ–सी बना दी जाती हैं जैसा कि चित्र में दिखाया गया है। बड़े व छोटे चक्र को घुमाने और सही खिड़की को चुनने से सभी व्यंजनों की मात्राएँ बच्चों को दिखाई देती हैं।

चरण 3: कुछ शब्द इस तरह से तैयार किए जाते हैं कि व्यंजन किसी विशेष मात्रा के साथ, कुछ शब्दों में, पहले अक्षर के रूप में प्रकट हो; अगले कुछ शब्दों में दूसरे

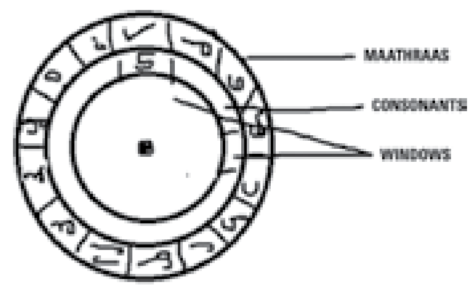

स्थान पर प्रकट हो और बाद के शब्दों में अन्तिम स्थान पर प्रकट हो।

उदाहरण:

విమానం, విరామం, విషయం
विमानम, विरामम, विषयम

చెవి, రవి, కవి
चेवि, रवि कवि

అడవి, నిడివి, మనవి
अडवि, निडिवि, मनवि

चरण 4: यह अभ्यास वैसा ही है जैसा कि वर्णों के परिचय में समाचार पत्र का संसाधन के रूप में प्रयोग करके किया गया था, अन्तर बस इतना ही है कि वर्णों के स्थान पर मात्राओं पर ध्यान केन्द्रित किया गया है।

चरण 5: बच्चों को विभिन्न वस्तुओं के चित्र दिए जाते हैं और उनसे उनके नाम बताने को कहा जाता है (जैसा कि संलग्नक में दिखाए गए आकलन पत्र में दिया गया है)।

संलग्नक:

1. मात्राएँ (गुणिमतालु) सिखाने के लिए बताई गई सहायक सामग्री का चित्र

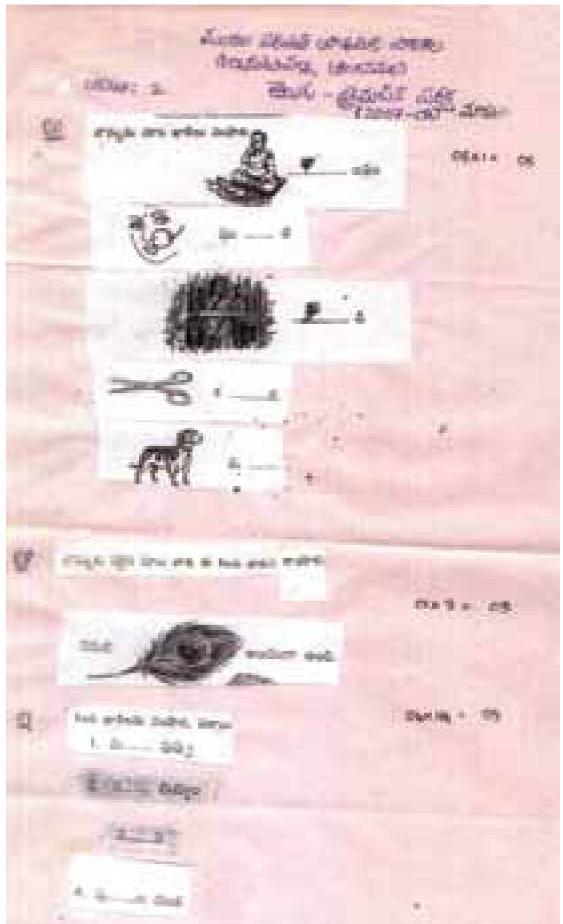

2. समाचार पत्र की कतरनों का प्रयोग करके दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए उपयोग में लाए गए आकलन पत्र

इस लेख के लिखे जाने के समय ***नागराजू*** *अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन व राष्ट्रीय ज्ञान आयोग की संयुक्त पहल www.teacehrsofindia.org पोर्टल के तेलुगू संस्करण के सम्पादक थे। उन्होंने 15 से अधिक वर्षों तक प्राथमिक व माध्यमिक स्तर पर क्रमशः भाषा और जीवविज्ञान पढ़ाया है। भाषा शिक्षण के लिए उन्होंने व्यापक रूप से बच्चों के लिए नियत समाचार पत्रों, परिशिष्टों तथा पत्रिकाओं का उपयोग किया है। वे स्कूल शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षण–अधिगम के मूल्यांकन में रुचि रखते हैं तथा प्रारम्भिक बाल्यावस्था की शिक्षा को बढ़ावा देना चाहते हैं। एक बार फिर से आन्ध्र प्रदेश के शिक्षा विभाग में शिक्षक के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। उनसे mulsraju.sekhar93@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।* ***अनुवादः*** *नलिनी रावल*